14 युग और मैं

नरेन्द्र शर्मा

कवि नरेन्द्र शर्मा का जन्म 1913 ई. में जहाँगीरपुर (बुलंदशहर) में हुआ। शिक्षा प्रयाग विश्व विद्यालय में एम.ए. तक हुई। वे आकाशवाणी के विविध भारती कार्यक्रम के प्रधान के रूप में सक्रिय रूप से जुड़े रहे।

उनका नाम प्रगतिवादी कवियों में भी लिया जाता है, जो अंशत: उचित भी है। नरेन्द्र शर्मा के कवि जीवन का विकास भी सुमित्रानंदन पंतजी की तरह तीन युगों में रहा है। वे पहले प्रेम और विरह के छायावादी गीतकार रहे, फिर प्रगतिवादी कवि के रूप में और अंत में अरविंदवादी दार्शनिक के रूप में। उनके कविता संकलनों में प्रमुख हैं- प्रभातफेरी, प्रवासी के गीत, अग्निशस्य, रक्तचंदन, लालनिशान, पलाशवन आदि कवितासंग्रहों के अतिरिक्त नरेन्द्रजी का एक कहानीसंग्रह भी है- 'कड़वी मीठी बातें' उनकी कई कविताओं में तत्कालीन समय की वेदना प्रतिबिंबित है।

'युग और मैं' कविता में देश में जो विनाशक वातावरण पैदा हुआ, बस्तियाँ उजड़ने लगीं, मानवता जख्मी हुई, इस की कवि को असह्य पीड़ा है। सारी दुनिया की पीड़ा के सामने कवि को अपनी पीड़ा नगण्य लगती है। मनुष्य को धरती पर स्वर्ग निर्मित करने के लिए परमात्मा ने हाथ दिए हैं, पर अपने में देवत्व पैदा करने का काम अधूरा छोड़कर मनुष्य आत्मघाती बनकर एक-दूसरे का पराभव कर जगत के वैभव को तहस-नहस कर रहा है, इसकी वेदना 'युग और मैं' कविता में अभिव्यक्त हुई हैं।

उजड़ रहीं अनगिनत बस्तियाँ, मन, मेरी ही बस्ती क्या!
धब्बों से मिट रहे देश जब, तो मेरी ही हस्ती क्या!

बरस रहे अंगार गगन से, धरती लपटें उगल रही,
निगल रही जब मौत सभी को, अपनी ही क्या जाय कही?
दुनियाँ भर की दु:ख कथा है, मेरी ही क्या करुणा कथा!

जाने कब तक धाव भरेंगे इस घायल मानवता के?
जाने कब तक सच्चे होंगे सपने सब की समता के?
सब दुनिया पर व्यथा पड़ी है, मेरी ही क्या बड़ी व्यथा!

खौल रहे हैं सात समुन्दर, डूबी जाती है दुनिया
ज्ञान थाह लेता था जिस से, ग़र्क हो रही वह दुनिया!
डूब रही हो सब दुनिया, जब, मुझे डूबता ग़म तो क्या!

हाथ बने किसलिये? करेंगे भू पर मनुज स्वर्ग निर्माण!
बुद्धि हुई किस लिए? कि डाले मानव-जग-जड़ता में प्राण!
आज हुआ सबका उलटा रुख, मेरा उलटा पासा क्या!

मानव को ईश्वर बनना था, निखिल सृष्टि वश में लानी,
काम अधूरा छोड़, कर रहा आत्मघात मानव ज्ञानी।
सब झूठे हो गये, निशाने, तुम मुझ से छूटे तो क्या!

एक दूसरे का अभिभव कर, रचने एक नये भव को।
है संघर्ष-निरत मानव अब, फूंक जगत-गत वैभव को
तहस-नहस हो रहा विश्व, तो मेरा अपना आपा क्या!

शब्दार्थ और टिप्पणी

धब्बा दाग, कलंक **हस्ती** अस्तित्व **लपटें** ज्वालाएँ **समता** समानता **व्यथा** दु:ख, पीड़ा **रूख** वर्तन, व्यवहार **निखिल** सारी, संपूर्ण **अभिभव** आदर **भव** संसार, दुनिया **वैभव** संपत्ति **आपा** अभिमान

मुहावरे

गर्क होना डूब जाना **तहस-नहस होना** नष्ट होना **पासा उलटा पड़ना** परिस्थितियाँ विपरीत होना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) प्रस्तुत कविता के रचनाकार का नाम बताईए।

(2) गगन और धरती से क्या हो रहा है?

(3) सात समंदर में क्या हो रहा है?

(4) काव्य-शीर्षक का समानार्थी शब्द दीजिए।

2. संक्षेप में उत्तर लिखिए :

(1) बुद्धि और हाथ किस कार्य के लिए हैं?

(2) ज्ञान और पृथ्वी की कैसी स्थिति हो रही है?

(3) मानव की क्या स्थिति हो गयी है?

3. सविस्तार उत्तर दीजिए :

(1) कवि के हृदय में कैसी व्यथा है?

(2) 'युग और मैं' कविता का संदेश लिखिए।

4. संदर्भ सहित स्पष्टीकरण दीजिए :

(1) मानव को ईश्वर बनना था, निखिल सृष्टि वश में लानी,
काम अधूरा छोड़कर रहा आत्मघात मानव ज्ञानी।
सब झूठे हो गये, निशाने, तुम मुझसे छूटे तो क्या!

(2) जाने कब तक घाव भरेंगे इस घायल मानवता के?
जाने कब तक सच्चे होंगे सपने सब की समता के?
सब दुनिया पर व्यथा पड़ी है, मेरी ही क्या बड़ी व्यथा!

5. विरोधी शब्द लिखिए :

हस्ती, अंगार, समुंदर

6. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द देकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए :

अनगिनत, गगन, दुनिया, निखिल, तहस-नहस, आपा

7. **ऐसी स्थिति में आप क्या कर सकते हैं?**

जब मौत सभी को निगल रही हो? चारो ओर अत्र-तत्र सर्वत्र आग लगी हो, हत्याएँ हो रही हों।

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- हमारे आसपास परिस्थिति जब विषम हो गयी हो, हमें क्या करना चाहिए? इस विषय पर चर्चा-विमर्श कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- पंडित नरेन्द्र शर्माजी की अन्य कृतियों के बारे में छात्रों को परिचित करवाइये।

●